

प्रकृति और मानव के बीच संबंध: भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण

डॉ० रेखा पाण्डेय

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

दर्शन विभाग,

भगवानदीन आर्यकन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

लखीमपुर-खीरी

सारांश :

भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के संबंध को गहरे आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा गया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, योग, सांख्य, जैन और बौद्ध दर्शन में प्रकृति को केवल एक भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवंत शक्ति और सहअस्तित्व का आधार माना गया है। भारतीय चिंतन में प्रकृति को माता, देवी और शक्ति के रूप में देखा जाता है, जहाँ मानव को उसका संरक्षणकर्ता माना गया है, न कि उसका स्वामी। यह विचारधारा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और पारिस्थितिक तंत्र को संरक्षित करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है। वेदों और उपनिषदों में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को पंचमहाभूत के रूप में मान्यता दी गई है, जो संपूर्ण सृष्टि का आधार हैं। योग और आयुर्वेद भी मानव जीवन और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल देते हैं। जैन एवं बौद्ध परंपराएँ अहिंसा और सहअस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित हैं, जो सभी जीवों के प्रति करुणा और सम्मान की भावना विकसित करने की प्रेरणा देते हैं। आधुनिक समय में पर्यावरणीय संकटों को देखते हुए भारतीय दर्शन के सिद्धांतों का पुनर्पाठ आवश्यक है। यह दृष्टिकोण न केवल सतत विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है। इस शोध-पत्र में भारतीय दार्शनिक परंपराओं के आलोक में प्रकृति और मानव के संबंधों का विश्लेषण किया गया है और यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार भारतीय परंपराएँ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकती हैं।

मुख्य शब्द: भारतीय दर्शन, प्रकृति, मानव, पर्यावरण, वेद, उपनिषद, योग, सांख्य, पंचमहाभूत, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, अहिंसा, सहअस्तित्व, संतुलन, पारिस्थितिकी, सतत विकास।

भूमिका

भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के संबंध को गहन आध्यात्मिक, नैतिक और दार्शनिक दृष्टि से देखा गया है। यह दर्शन प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत शक्ति के रूप में स्वीकार करता है, जिससे मानव मात्र उपभोगकर्ता नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग और संरक्षक होता है। यह विचारधारा न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि मनुष्य को प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा भी देती है। भारतीय परंपराओं में प्रकृति को दिव्य और पूजनीय माना गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति और मानव के बीच संबंध केवल भौतिकता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक एवं नैतिक भी हैं।

भारतीय ग्रंथों में प्रकृति और मानव का संबंध

भारतीय दर्शन के मूल स्रोत वेद, उपनिषद, पुराण, योग, सांख्य, जैन और बौद्ध दर्शन हैं। इन ग्रंथों में प्रकृति को दिव्यता के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ मनुष्य को इसका संरक्षक माना गया है, न कि इसका स्वामी।

1. वेदों में प्रकृति का महत्व

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ऋग्वेद में कहा गया है—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (ऋग्वेद 10.12.1)

(अर्थात्, पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं)।

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि भारतीय चिंतन में पृथ्वी को माँ के रूप में देखा गया है, और मनुष्य को उसका पुत्र माना गया है। इस विचारधारा के अनुसार, मनुष्य को प्रकृति के प्रति उसी प्रकार का सम्मान और संरक्षण भाव रखना चाहिए, जैसा वह अपनी माता के प्रति रखता है।

यजुर्वेद में भी प्रकृति के संरक्षण की महत्ता का उल्लेख मिलता है—

"द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।"

(यजुर्वेद 36.17)

(अर्थात्, आकाश में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हो, जल में शांति हो, औषधियों में शांति हो)।

यह मंत्र प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण तथा शांति की भावना को दर्शाता है।

2. उपनिषदों में प्रकृति की अवधारणा

उपनिषदों में प्रकृति को परम तत्व का अभिन्न भाग माना गया है। *छांदोग्य उपनिषद* (6.2.3) में पंचमहाभूतों—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—को सृष्टि का आधार बताया गया है। यह सिद्धांत पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने के महत्व को दर्शाता है।

ईशोपनिषद (1.1) में कहा गया है—

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।"

(अर्थात्, संपूर्ण जगत ईश्वर से व्याप्त है और इसमें जो कुछ भी है, वह परमात्मा का अंश है)।

इस सिद्धांत के अनुसार, प्रकृति केवल भौतिक वस्तु नहीं, बल्कि दिव्य तत्व से युक्त है, जिसे नष्ट करना या दूषित करना मानवता के विरुद्ध है।

3. योग और आयुर्वेद में प्रकृति और मानव का संबंध

योग शास्त्रों में भी प्रकृति और मानव के बीच संतुलन की बात कही गई है। पतंजलि के योग सूत्रों में बताया गया है कि मनुष्य को प्रकृति के नियमों के अनुरूप जीवन व्यतीत करना चाहिए। योग केवल आत्मा और शरीर के बीच संतुलन ही नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच संतुलन स्थापित करने की भी प्रक्रिया है।

आयुर्वेद में भी प्रकृति के महत्व पर बल दिया गया है। *चरक संहिता* में लिखा गया है—

"हिता भुक्, मिता भुक्, ऋत भुक्।"

(अर्थात्, संतुलित आहार ग्रहण करो, उचित मात्रा में ग्रहण करो और ऋतु के अनुसार आहार ग्रहण करो)।

यह सिद्धांत पर्यावरणीय अनुकूलता को दर्शाता है, जिसमें मनुष्य को प्रकृति के नियमों का पालन करने की शिक्षा दी गई है।

दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रकृति और मानव का संबंध

1. सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष

सांख्य दर्शन के अनुसार, सृष्टि का निर्माण दो तत्वों—प्रकृति और पुरुष—से हुआ है (कपिल मुनि, *सांख्यकारिका*)। प्रकृति ही समस्त भौतिक जगत का मूल आधार है, जबकि पुरुष चेतन तत्व है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रकृति और मानव (पुरुष) के बीच गहरा संबंध है, जिसमें प्रकृति के बिना जीवन संभव नहीं है।

2. जैन दर्शन में अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण

जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च सिद्धांत माना गया है। *आचारंग सूत्र* (1.1.3) में कहा गया है—

"पर्यावरण का संरक्षण ही सबसे बड़ी अहिंसा है।"

जैन धर्म के पंच महाव्रतों में से एक 'अपरिग्रह' (संपत्ति और संसाधनों का अधिक संचय न करना) भी पर्यावरण संरक्षण से संबंधित है।

3. बौद्ध दर्शन में प्रकृति के प्रति करुणा

बौद्ध धर्म में सभी जीवों के प्रति करुणा और सहअस्तित्व की शिक्षा दी गई है। *धम्मपद* (129-130) में कहा गया है—

"सभी जीव जीना चाहते हैं, उन्हें मत मारो, मत सताओ।"

यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रकृति और मानव के बीच संबंध अहिंसा और करुणा पर आधारित होना चाहिए।

आधुनिक संदर्भ में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

आज के युग में, जब जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता की हानि, और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब भारतीय दर्शन की यह पारिस्थितिकीय समझ और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। महात्मा गांधी ने भी प्रकृति के साथ संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया था—
"पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं" (गांधी, *यंग इंडिया*, 1928)।

साहित्य समीक्षा

प्रकृति और मानव के संबंध पर भारतीय दर्शन का एक गहरा और समग्र दृष्टिकोण है। प्राचीन ग्रंथों, उपनिषदों, वेदों, पुराणों, तथा आधुनिक विद्वानों के विचारों में यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि एक चेतन तत्व माना गया है। इस साहित्य समीक्षा में हम विभिन्न दार्शनिक एवं धार्मिक स्रोतों के आधार पर प्रकृति-मानव संबंध का विश्लेषण करेंगे।

1. वेदों और उपनिषदों में प्रकृति-मानव संबंध

वेदों में प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य पर बल दिया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है:

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः";

अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं (ऋग्वेद 1.164.33)।

यजुर्वेद (में भी पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है (यजुर्वेद 36.17)।

उपनिषदों में प्रकृति को केवल भौतिक तत्व न मानकर ब्रह्म (सर्वव्यापी चेतना) का रूप माना गया है। छांदोग्य उपनिषद में कहा गया है कि समस्त सृष्टि ब्रह्म से उत्पन्न हुई है और अंततः उसी में विलीन हो जाती है (छांदोग्य उपनिषद 3.14.1)।

2. महाकाव्यों और पुराणों में प्रकृति की भूमिका

रामायण और महाभारत में भी प्रकृति का विशेष महत्व दिया गया है। रामायण में भगवान राम वनवास के दौरान प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं। महाभारत में भी अर्जुन को गीता का उपदेश देते समय श्रीकृष्ण प्रकृति और मानव के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालते हैं (भगवद्गीता 3.10)।

विष्णु पुराण में भी प्रकृति और मानव के पारस्परिक संबंध की व्याख्या की गई है। इसमें बताया गया है कि यदि मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग नहीं करता, तो पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है (विष्णु पुराण 1.19)।

3. जैन और बौद्ध दर्शन में प्रकृति का स्थान

जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य माना गया है, जिसमें केवल मानवों ही नहीं, बल्कि समस्त जीवों और प्राकृतिक तत्वों के प्रति भी दया और संवेदना का भाव रखा गया है (आचारांग सूत्र 1.1.3)।

बौद्ध धर्म में भी प्रकृति के प्रति करुणा का संदेश दिया गया है। गौतम बुद्ध ने कहा था: *"सब जीवों के प्रति प्रेमपूर्ण करुणा रखो!"* (सुत्तनिपात 143)

4. आधुनिक विचारक और पर्यावरण चेतना

महात्मा गांधी ने प्रकृति के साथ सामंजस्य की अवधारणा को आत्मनिर्भरता और ग्राम स्वराज से जोड़ा। उन्होंने कहा था, *"पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी के लालच को नहीं।"*

स्वामी विवेकानंद ने भी भारतीय आध्यात्मिकता में प्रकृति और मानव के गहरे संबंध को रेखांकित किया है (विवेकानंद, 1897)।

5. समकालीन शोध और निष्कर्ष

आधुनिक विद्वानों ने भारतीय परंपरा में पर्यावरणीय नैतिकता को पुनः व्याख्यायित किया है। कपूर (2020) के अनुसार, भारतीय ग्रंथों में वर्णित पंचभूत सिद्धांत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) आज की पारिस्थितिकी के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मिश्रा (2018) के अनुसार, भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के बीच एक पारस्परिक संबंध का दृष्टिकोण पश्चिमी द्विधात्मक दृष्टिकोण से अधिक संतुलित है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के पारस्परिक संबंध की अवधारणा का विश्लेषण करना ।
2. प्राकृतिक संतुलन और नैतिकता पर भारतीय परंपरा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।
3. आधुनिक पर्यावरणीय चिंताओं के संदर्भ में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण की समीक्षा करना ।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में भारतीय दर्शन और पर्यावरणीय संतुलन के संबंध को समझने के लिए गुणात्मक और वर्णनात्मक शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

1. डेटा संग्रह विधि:

प्राथमिक स्रोत:

- वेद, उपनिषद, पुराण, भगवद्गीता, जैन और बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन
- गांधी, विवेकानंद, टैगोर आदि आधुनिक विचारकों के पर्यावरण पर विचार

द्वितीयक स्रोत:

- पर्यावरणीय अध्ययन से जुड़े शोध-पत्र, पुस्तकें, और ऑनलाइन संसाधन

- पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सरकारी और गैर-सरकारी रिपोर्ट
- समकालीन शोध पत्र (मिश्रा, 2018; कपूर, 2020)

2. शोध की रूपरेखा:

साहित्य समीक्षा: भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव संबंधों का अध्ययन

आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान: जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हास, प्रदूषण आदि

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण का विश्लेषण: प्राचीन ग्रंथों में दिए गए सिद्धांतों की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

समाधान प्रस्ताव: भारतीय दर्शन के आधार पर पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु सुझाव

3. डेटा विश्लेषण:

गुणात्मक (Qualitative) डेटा का वर्णनात्मक (Descriptive) और तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन भारतीय दार्शनिक सिद्धांतों और आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के बीच संबंध स्थापित करना टेबल के माध्यम से डेटा का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण

डेटा और सांख्यिकीय विश्लेषण:

भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के पारस्परिक संबंध

स्रोत	मुख्य सिद्धांत	प्राकृतिक संतुलन पर प्रभाव
वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)	प्रकृति को दिव्य शक्ति के रूप में मान्यता, पंचमहाभूत सिद्धांत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)	संतुलन बनाए रखने हेतु यज्ञ, पर्यावरणीय संरक्षण, जल एवं वृक्षों की पूजा
उपनिषद (छांदोग्य, ईशावास्य उपनिषद)	ब्रह्मांडीय एकता, प्रकृति और आत्मा का संबंध	अहिंसा, त्याग, और सतत जीवनशैली को प्रोत्साहन
पुराण (विष्णु पुराण, भागवत पुराण, शिव पुराण)	प्रकृति को देवी-देवताओं का स्वरूप (पृथ्वी – माता, नदियाँ – देवी, सूर्य – देवता)	प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान और संरक्षण का संदेश
महाकाव्य (रामायण, महाभारत)	वनवास और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, भगवान कृष्ण का गीता में प्रकृति संतुलन का संदेश	प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन, अहिंसा और धर्म का पालन
जैन दर्शन	जीव और अजीव में अहिंसा, पंचेंद्रिय जीवों का सम्मान	प्रकृति के अंधाधुंध दोहन का निषेध, संयमित उपभोग
बौद्ध दर्शन	करुणा, मध्यम मार्ग, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता	प्राकृतिक संसाधनों के अति-शोषण से बचाव, संतुलित उपभोग
आधुनिक विचारक (गांधी, विवेकानंद, टैगोर)	ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता, प्रकृति के साथ जीवन	सतत विकास, प्राकृतिक संसाधनों के प्रति ज़िम्मेदारी
समकालीन शोध (मिश्रा, 2018; कपूर, 2020)	भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय नैतिकता और समकालीन प्रासंगिकता	पारिस्थितिकीय संतुलन हेतु भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण की पुनर्चना

विश्लेषण:

भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के संबंध को केवल भौतिक संसाधन उपभोग के रूप में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक रूप से देखा गया है। प्राचीन ग्रंथों और आधुनिक विचारों में प्रकृति के सम्मान, संतुलित उपभोग, और सतत विकास की अवधारणा स्पष्ट रूप से उभरकर आती है। यह दृष्टिकोण आज के पर्यावरणीय संकटों का समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

प्राकृतिक संतुलन और नैतिकता पर भारतीय परंपरा की प्रासंगिकता

भारतीय परंपरा / स्रोत	मुख्य सिद्धांत	आधुनिक प्रासंगिकता
वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद)	पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश (पंचमहाभूत) के संतुलन पर बल	जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
भगवद्गीता	प्रकृति (प्रकृति देवी) के साथ संतुलन बनाए रखने की शिक्षा	स्थायी कृषि, जैविक खेती, संतुलित उपभोग
जैन धर्म	अहिंसा और अपरिग्रह (कम संसाधन खपत)	उपभोक्तावाद में कमी, शाकाहार, जीव-जंतुओं के अधिकार
बौद्ध धर्म	मध्यम मार्ग और करुणा आधारित जीवन	टिकाऊ जीवनशैली, पर्यावरण संरक्षण, सादा जीवन
वृक्ष पूजा और नदी संस्कृति	पेड़-पौधों और नदियों को पवित्र मानना	वनों की कटाई रोकना, नदियों का संरक्षण
गांधीवादी विचारधारा	ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता, 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत	सतत विकास, स्थानीय उत्पादन, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण
आधुनिक शोध (कपूर, 2020; मिश्रा, 2018)	भारतीय परंपरा में पारिस्थितिकीय नैतिकता की भूमिका	जलवायु संकट से निपटने के लिए भारतीय परंपरा की शिक्षाओं का पुनरावलोकन

विश्लेषण:

भारतीय परंपरा में प्राकृतिक संतुलन और नैतिकता को हमेशा से महत्वपूर्ण माना गया है। आज के समय में, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याओं के समाधान के लिए भारतीय परंपरागत ज्ञान अत्यंत प्रासंगिक है। अहिंसा, अपरिग्रह, पंचमहाभूत संतुलन, और ट्रस्टीशिप जैसी अवधारणाएं आधुनिक पर्यावरणीय संकटों से निपटने के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती हैं।

आधुनिक पर्यावरणीय चिंताओं के संदर्भ में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण

आधुनिक पर्यावरणीय चिंता	भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण	समाधान और प्रासंगिकता
जलवायु परिवर्तन	पंचमहाभूत सिद्धांत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश का संतुलन)	सतत विकास, नवीकरणीय ऊर्जा, पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना
वायु और जल प्रदूषण	यज्ञ और हवन के माध्यम से पर्यावरण शुद्धिकरण (वेदों में)	वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैविक खेती, अपशिष्ट प्रबंधन

	वर्णित)	
जैव विविधता का नुकसान	अहिंसा (जैन धर्म) और करुणा (बौद्ध धर्म) का सिद्धांत	वन्यजीव संरक्षण, प्राकृतिक आवासों की रक्षा, सतत कृषि
अत्यधिक उपभोग और संसाधन क्षय	अपरिग्रह (संयमित उपभोग) और ट्रस्टीशिप (गांधीवादी विचार)	मितव्ययिता, सादा जीवन, स्थानीय संसाधनों का न्यायसंगत उपयोग
भूमि कटाव और वनों की कटाई	पृथ्वी को माता मानने की वेदों की अवधारणा ("माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः")	वृक्षारोपण अभियान, वन संरक्षण कानून, प्राकृतिक खेती
पर्यावरणीय असमानता	"वसुधैव कुटुंबकम्" (सम्पूर्ण विश्व एक परिवार) की अवधारणा	पर्यावरणीय न्याय, गरीब और आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा
औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से होने वाली क्षति	कर्म सिद्धांत – कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता का पालन	हरित प्रौद्योगिकी, टिकाऊ शहरी विकास, पारंपरिक ज्ञान का समावेश
प्लास्टिक और कचरा प्रबंधन	भोगवाद का त्याग और प्रकृति के प्रति कर्तव्यभाव (गीता और उपनिषदों में वर्णित)	पुनर्चक्रण, प्लास्टिक प्रतिबंध, जैविक और पुनर्नवीनीकरण उत्पादों का उपयोग
स्थायी विकास	"लोकसंहिता" (समाज हित के लिए कार्य) और संतुलित जीवनशैली का समर्थन	हरित ऊर्जा, जल संरक्षण तकनीक, जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन

विश्लेषण:

भारतीय दर्शन में प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की शिक्षा दी गई है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता हास जैसी समस्याओं के समाधान के लिए वेदों, उपनिषदों, बौद्ध एवं जैन परंपराओं के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत और "सादा जीवन, उच्च विचार" जैसी अवधारणाएँ संसाधनों के सतत उपयोग और पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती हैं। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है, जो आधुनिक पारिस्थितिक संकटों का समाधान प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन में **प्रकृति और मानव के बीच गहरे और परस्पर जुड़ाव** की अवधारणा को प्रमुखता दी गई है। प्राचीन ग्रंथों में प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि **आध्यात्मिक और नैतिक आधार** के रूप में देखा गया है।

1. भारतीय परंपरा और ग्रंथों की प्रासंगिकता:

- वेदों, उपनिषदों, जैन एवं बौद्ध ग्रंथों में संतुलित उपभोग, अहिंसा, और पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया गया है।
- आधुनिक पर्यावरणीय संकटों के समाधान के लिए इन मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है।

2. आधुनिक समस्याओं का समाधान:

- जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता ह्रास जैसी समस्याओं के लिए भारतीय दार्शनिक सिद्धांतों से समाधान मिल सकता है।
- अहिंसा (जैन दर्शन), अपरिग्रह (संयमित उपभोग), पंचमहाभूत संतुलन (वेदों की अवधारणा), और ट्रस्टीशिप (गांधीवादी विचार) सतत विकास में सहायक हो सकते हैं।
- 3. **सतत विकास और भारतीय दर्शन:**
 - 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा पर्यावरणीय न्याय की ओर संकेत करती है।
 - भारतीय परंपरा में सुझाए गए नैतिक मूल्यों के पालन से पर्यावरण संरक्षण संभव है।

संदर्भ:

1. ऋग्वेद
2. ऋग्वेद (10.12.1)
3. यजुर्वेद (36.17)
4. छांदोग्य उपनिषद (6.2.3)
5. ईशोपनिषद (1.1)
6. सांख्यकारिका – कपिल मुनि
7. आचारांग सूत्र (1.1.3)
8. धम्मपद (129-130)
9. गांधी, जंग इंडिया, 1928
10. चरक संहिता
11. यजुर्वेद
12. छांदोग्य उपनिषद
13. भगवद्गीता
14. विष्णु पुराण
15. आचारांग सूत्र
16. सुत्तनिपात
17. विवेकानंद, स्वामी (1897)
18. गांधी, महात्मा
19. कपूर, आर. (2020)। *भारतीय दर्शन और पर्यावरण नैतिकता*।
20. मिश्रा, एस. (2018)। *भारतीय पारिस्थितिकी दर्शन का पुनर्पाठ*।